

नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305

ई-मेल: mgahvpro@gmail.com वेबसाइट : www.hindivishwa.org



‘जाति निर्मूलन पर डॉ. आंबेडकर के विचार एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य’ पर

प्रो. प्रदीप आगलावे का व्याख्यान

समानता के विचार से होगा जाति प्रथा का निर्मूलन- प्रो. प्रदीप आगलावे

वर्धा, 31 अगस्त 2017: व्यक्ति को सम्मान और समानता प्रदान करने से जाति प्रथा का निर्मूलन हो सकेगा। भारतीय समाज में जाति व्यवस्था को तोड़ने के लिए सामाजिक अंतर्संबंधों को मजबूत करना आवश्यक है। उक्त विचार राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज विश्वविद्यालय, नागपुर में डॉ. आंबेडकर अध्ययन केंद्र के अध्यक्ष प्रो. प्रदीप आगलावे ने व्यक्त किये। वे महात्मा गांधी



अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में डॉ. बाबासाहब आंबेडकर सिदो कान्हू मुर्मू दलित एवं जनजाति अध्ययन केंद्र में आयोजित विशेष व्याख्यान में बतौर प्रमुख वक्ता बोल रहे थे।

‘जाति निर्मूलन पर डॉ. आंबेडकर के विचार एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य’ पर प्रो. प्रदीप आगलावे ने विशेष व्याख्यान दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्कृति विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. एल. कारुण्यकरा ने की। उन्होंने कहा कि जाति प्रथा भारत में ही देश अन्यत्र कहीं नहीं है। हम सब मानव हैं और इस नाते आपस में किसी भी प्रकार की विषमता नहीं होनी चाहिए। परंतु जाति से विषमताएं पैदा हुई हैं। इस व्यवस्था का गहराई से अध्ययन डॉ. आंबेडकर ने 25वीं वर्ष की आयु में ही किया था। दरअसल लाहौर में होने वाली एक परिषद में उन्हें यह भाषण देना था

परंतु किसी कारण से परिषद हुई नहीं और यह भाषण उन्होंने पुस्तक के रूप में 'जाति प्रथा का उन्मूलन' नाम से प्रकाशित की। उन्होंने कहा कि डॉ. अंबेडकर का मानना था कि जाति प्रथा एक समाज विघातक प्रवृत्ति है और इससे सामाजिक संबंध एक सीमा में बंध जाते हैं। जाति के आधार पर राष्ट्र नैतिकता का निर्माण नहीं कर सकता और सामाजिक गुलामी को जन्म देता है।



जाति व्यवस्था संबंधी डॉ. अंबेडकर के कई विचारों का हवाला देते हुए प्रो. आगलावे ने कहा समानता का विचार ही जाति प्रथा निर्मूलन का मुख्य आधार है। इस अवसर पर प्रो. कारुण्यकरा ने प्रो. आगलावे का परिचय दिया तथा उपस्थितों का स्वागत करते हुए अपने विचार रखे। कार्यक्रम में विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों के साथ सहायक प्रोफेसर डॉ. सुरजीत कुमार सिंह, संदीप सपकाले, शैलेश कदम, डॉ. हिमांशु शेखर, जनसंपर्क अधिकारी बी. एस. मिरगे उपस्थित थे।